''क्यों मर्यादाएं तोड़ी''

नन्दलाल धाकरे 'मधुर'

पानी न होता

प्रश्न हिलोरे मार रहा है गंगा जी के पानी में।
क्यों मर्यादाएं तोड़ी हैं, आपस की खींचातानी में।।

कसमें खा-खा करके मेरी, लोग प्रतिज्ञाएं करते।
जाने कितने आकर तट पर, आनंदित जन घट भरते।
कर्मकाण्ड भी कितने होते, मेरे निकट किनारे पर,
कितने जन पुष्पों की वर्षा, करते हें मेरे ऊपर।।
फिर भी कलुषित भाव दीखता तन में, मन में, बानी में,
क्यों मर्यादाएं...
मेरे दुख से आज रो रहा, हिमगिर का पावन आँचल,
कहने भर को शुद्ध बचा है, भागीरथी नदी का जल।
लूट-पाट के खेल खेलते, आये रोज झमेले हैं,
लाखों का व्यय यूं ही होता जब-जब लगते मेले हैं।
केवल दुख का खण्डकाव्य है, मेरी राम कहानी में।
क्यों मर्यादाएं...
जन समूह का सारा कचरा, मुझमें ही विलीन होता,
कहां सुन रहे हैं नेताजी, मेरा घायल मन रोता।
कलि में मेरा क्या भविष्य है मन में बस यह हलचल है,
मानव की करतूतों से, गंगा जल गंदाजल है।।
मुझको फर्क सूझ नहीं पड़ता, ज्ञानी में अज्ञानी में।
क्यों मर्यादाएं...
उद्योगों से सभी गन्दगी मेरी जीवन रेखा है।
झेल रहा हूं सकल रसायन कैसा लेखा-जोखा है।।
तट सब वृक्ष विहीन हुए हैं मेरे हाल निराले हैं।
जो भी नगर निकट हैं उनके मुझमें मिलते नाले हैं।।
मेरा तो सर्वस्व मिट चला जनता की मनमानी में।
क्यों मर्यादाएं...

कैसी निष्ठुर छाती है?

आज हिमालय की छाती, देखो-देखो थर्राती है,
धरती काँपी, अम्बर काँपा, प्रकृति कोप दिखाती है।
फिर भी मानव नहीं बदलता, कैसी निष्ठुर छाती है।।

जन गण मन विचलित होता है, कुंठित अन्तरिक्ष रोता है।
सभी दिशायें शान्त हुई हैं, कलम कवि की क्लान्त हुई है।।
देखो वह विचलित चिड़िया जो नीड़ नहीं जा पाती है।
फिर भी मानव नहीं बदलता, कैसी निष्ठुर छाती है।।

हम स्वारथ वश दोहन करते, कागज में तरू रोपण करते।
खूब खदानें लूट रहे हैं, गर्जन बम के फूट रहे हैं।।
जिससे पर्यारण जगत की, छवि धूमिल हो जाती है।
फिर भी मानव नहीं बदलता, कैसी निष्ठुर छाती है।।

नये प्रयोगों का प्रतिफल है, दूषित जीवन का संबल है।
नये-नये जीवाणु बनते, विष मिश्रित कीटाणु बनते।
जिसके कारण वृक्षों की, हरियाली भी शरमाती है।
फिर भी मानव नहीं बदलता, कैसी निष्ठुर छाती है।

घर्षण का ये आकर्षण है, नव गैसों का उत्सर्जन है।
नये रोग होते जाते हैं, यही भोग भोगे जाते हैं।।
कर्मों के इस प्रतिफल में ही, सृष्टि फंसती जाती है।
फिर भी मानव नहीं बदलता, कैसी निष्ठुर छाती है।।

संपर्क करें:
नन्दलाल धाकरे 'मधुर'
सूर्याश्रम, पश्चिम चौक
खाण्डा, आगरा, उत्तर प्रदेश-283 201
मो. 9639867373